अध्याय-द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

2.2 साहित्य अध्ययन तथा पुनरावलोकन के लाभ

2.3 संबंधित शोध कार्यों का पुनरावलोकन

अध्याय 2

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना –

सतत् मानव प्रयासों से भूतकाल में एकत्रित ज्ञान अनुसंधान में मिलता है। अनुसंधान द्वारा प्रस्तावित अध्ययन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में संबंधित समस्याओं पर पहले किये गये कार्य से बिना जोड़े, स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नहीं हो सकता। किसी भी अनुसंधान अध्ययन की योजना में महत्वपूर्ण कदमों में एक कदम अनुसंधान जर्नलों (Journals), पुस्तकों, अनुसंधान विवेचना (Dissertation), शोधलेख (Thesis) व अन्य सूचना स्त्रोतों की सावधानीपूर्वक समीक्षा है। किसी अच्छे नियेजित अनुसंधान अध्ययन से पहले संबंधित साहित्य की समीक्षा अतिआवश्यक है।

2.2 साहित्य अध्ययन तथा पुनरावलोकन के लाभ –

- ❖ साहित्य अध्ययन तथा पुनरावलोकन किसी भी अनुसंधान कार्य के लिये आवश्यक सैद्धांतिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है। प्रत्येक प्रत्यय और धारणा को स्पष्ट करता है।
- ❖ इसके द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि इस समस्या क्षेत्र में अनुसंधान की स्थिति क्या है? कब, कहां, किसने और कैसे अनुसंधान कार्य किया है? इसके ज्ञान द्वारा अपने अध्ययन की योजना बनाना सुविधाजनक हो जाता है।
- ❖ संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण अनुसंधान के लिये अपनायी जाने वाली विधि, प्रयोग के विश्लेषण के लिये प्रयोग आने वाली उपयुक्त विधियों को स्पष्ट करता है।

- ❖ यह इस तथ्य को भी आभास देता है कि किया गया अनुसंधान कार्य किस सीमा तक सफल हो सकेगा और प्राप्त निष्कर्षो की उपयोगिता क्या होगी ?
- ❖ इसका यह महत्वपूर्ण कार्य समस्या के परिभाषीकरण, अवधारणा बनाना, समस्या के सीमांकन और परिकल्पना के निर्माण में सहायता करता है।

2.3 संबंधित शोध कार्य का पुनरावलोकन –

इस शोध के पूर्व में हुए शोध कार्य का आंकलन निम्नलिखित है –

पिटर (1941), ने महिलाओं एवं पुरूषों के मध्य व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया। जिसमें पाया गया कि व्यावसायिक आकांक्षा में लिंग अपनी प्रभावी भूमिका अदा करता है। कुछ व्यवसाय ऐसे हैं जिन्हें पुरूषों द्वारा चुना जाता है जैसे शारीरिक क्रियाओं से संबंधित व्यवसाय, यांत्रिक, वैज्ञानिक, राजनैतिक एवं क्रय-विक्रय से संबंधित को प्राथमिकता देते हैं। कुछ व्यवसाय ऐसे हैं जिन्हें महिला प्राथमिकता देती हैं जैसे संगीत, साहित्य, लिपिक, शिक्षक एवं सामाजिक कार्य से संबंधित हैं।

रो (1956), ने व्यावसायिक रूचियों के सहसंबंध का अध्ययन किया 'रो' ने इस अध्ययन में वर्गीकरण पद्धति अपनायी। समस्त व्यवसायों को दो भागों में विभाजित कर दिया। यह शैक्षिक एवं जिम्मेदार व्यवसायों से 'रो' ने दोनों प्रकारों के सहसंबंध को ज्ञात किया तथा इन दोनों प्रकार के व्यवसायी में सहसंबंध पाया गया था।

डायन्स चेक डीन्ट (1956), नें विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि एवं जीवन के प्रारंभिक वर्षो में अभिभावकों के साथ हुई अंतःक्रिया के विभिन्न पक्षों के मध्य सहसंबंध ज्ञान किया साथ ही इस अध्ययन से यह निष्कर्ष

भी निकला कि व्यावसायिक रूचि एवं पालकों के बाह्य दबाबों के मध्य सहसंबंध नहीं है।

टॉलर और सेवल (1957), ने हाईस्कूल ने विद्यार्थियों को शैक्षिक आकांक्षा एवं व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन में शहरों एवं ग्रामीण तथा छात्र एवं छात्राओं के मध्य तुलनात्मक अध्ययन किया। इस शोध कार्य में उन्होनें पाया कि बालिकाओं की शैक्षिक एवं व्यावसायिक आकांक्षा का उनके आवासीय क्षेत्र से कोई संबंध नहीं है। बालकों की व्यावसायिक आकांक्षाओं की अपेक्षा शैक्षिक आकांक्षा आवासीय पृष्ठभूमि से अधिक संबंधित है।

वेन्टर (1967), नें विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन किया इस शोध में विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षा एवं व्यावसायिक योग्यता का अध्ययन किया। प्रमुख निष्कर्ष ये है कि व्यावसायिक क्षमताओं और व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य सहसंबंध नहीं होता। उच्च वर्ग के विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर तथा निम्न वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में कोई अंतर नहीं होता।

हॉलर और मिलर (1969), इन्होनें परिवार के सामाजिक, आर्थिक स्तर एवं व्यावसायिक रूचि में सहसंबंध का अध्ययन किया। इस अध्ययन में उन्होनें सामाजिक, आर्थिक स्तर तथा व्यावसायिक रूचि में धनात्मक सहसंबंध पाया।

प्रेन्टर इस्ट (1972), ने उच्च बुद्धिलब्धि एवं उच्च कक्षा स्तर तथा उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर एवं उच्च व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य सह–संबंध का अध्ययन किया तथा शोध कार्य से निष्कर्ष निकला कि उच्च बुद्धिलब्धि का उच्च कक्षा स्तर के तथा उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर का उच्च व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य सहसंबंध होता है।

हॉलण्ड (1976), इन्होनें व्यावसायिक रूचि को प्रभावित करने वाले तत्वों का अध्ययन किया इस अध्ययन के लिये उन्होनें व्यावसायों को तीन भागों में वर्गीकृत किया। प्रथम प्रकार के व्यवसायों में वे व्यवसाय जिन्हें व्यक्ति सामाजिक प्रतिष्ठा एवं सामाजिक आर्थिक स्तर के कारण अपनाते हैं। दूसरे वर्ग में वे व्यवसाय थे जिनसे व्यक्ति आवश्यकता के कारण जुड़ जाते हैं। तृतीय वर्ग में वे व्यवसाय थे जिन्हें चरित्रवश अपनाया जाता है। हॉलेण्ड ने अपने अध्ययन में दर्शाया कि रूचियों में आठ संरचनाऐं होती हैं तथा यह आदेशात्मक होती हैं।

डॉक्टेरेट उपाधि हेतु किये गये शोध कार्य –

रेड्डी (1972), इन्होनें व्यावसायिक आवश्यकता तथा व्यावसायिक चुनाव से संबंधित अध्ययन किया था। यह अध्ययन उच्चतर माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों पर किया गया। इस शोध कार्य में परिवार का आर्थिक स्तर तथा व्यावसायिक चुनाव तथा व्यावसायिक आवश्यकता के मध्य सहसंबंध पाया गया।

बोहरा (1977), ने व्यावसायिक चयन एवं बुद्धिमत्ता, शैक्षिक अभिरूची, व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध पर शोध कार्य किया। यह अध्ययन पॉलेटेक्निक के विद्यार्थियों पर किया गया था। इस अध्ययन में व्यावसायिक चयन बुद्धिमत्ता, शैक्षिक अभिरूचि, व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सहसंबंध नहीं पाया गया।

सिन्हा (1978), इन्होनें व्यावसायिक रूचि से संबंधित अध्ययन किया था। इस शोधकार्य में माध्यमिक स्कूलों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया गया था। इसमें धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

सानुखिया (1984), इन्होनें असम राज्य में व्यावसायिक शिक्षा के उच्च स्तर माध्यमिक पाठ्यक्रम से संबंधित अपने अध्ययन में पाया कि छात्रों की व्यावसायिक रूचियाँ उनके निवास स्थान की भौगोलिक परिस्थितियों पर निर्भर करती हैं। अतः किसी भी क्षेत्र में व्यावसायिक पाठ्यक्रम छात्रों की योग्यता, रूचि, भावी आवश्यकता, भौगोलिक परिस्थितियों एवं उस क्षेत्र में उपलब्ध कच्चे माल को ध्यान में रखते हुए निर्धारित करनी चाहिये।

मनगत डी (1988), ने व्यावसायिक परिपक्वता का बुद्धिमत्ता, सामाजिक, आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन किया। मनगत डी. नें अपने शोधकार्य में उपरोक्त चरों के मध्य सहसंबंध पाया था।

जैन (1989), इन्होनें वाणिज्य के सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया था। इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया था। न्यादर्श के रूप में अजमेर के जिन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 50 सामान्य विद्यार्थी तथा 50 अनुसूचिज जातियों के विद्यार्थियों को लिया गया था। इस अध्ययन में पाया गया कि 64 प्रतिशत छात्र आगे पढ़ना चाहते हैं तथा शेष उच्च व्यावसायिक आकांक्षा रखते थे।

ओंकार (1989), इन्होनें कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का बुद्धिमत्ता तथा पालकों की शिक्षा एवं व्यवसाय के मध्य सह–संबंध का अध्ययन किया था। उन्होनें इस अध्ययन में पाया कि जो विद्यार्थी अधिक बुद्धिमान हैं उन्होनें उच्च प्रकार के व्यवसायों का चयन किया। जिन विद्यार्थियों के पिता उच्च शिक्षा प्राप्त थे वे विद्यार्थी अधिक बुद्धिमान थे। विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा एवं बुद्धिमत्ता का उनके पिता की शिक्षा एवं व्यवसाय के मध्य सहसंबंध पाया गया था।

मास्टर स्तर पर किये गये शोध –

वर्मा (1991), ने विकलांग एवं समान्य विद्यार्थियों के मानसिक कार्य निष्पादन एवं व्यावसायिक इच्छा पर शोध कार्य किया था। न्यादर्श के लिये भोपाल के विद्यालयों के 50 विकलांग विद्यार्थियों को चुना गया था। इस अध्ययन में सामान्य विद्यार्थियों के मानसिक कार्य निष्पादन एवं व्यावसायिक इच्छा के मध्य कोई संबंध नहीं पाया गया। जबकि विकलांग विद्यार्थियों के कार्य निष्पादन एवं व्यावसायिक रूचि के मध्य सह संबंध पाया गया था।

केवलराम राजकुमार (1999), ने कक्षा 11वीं और 12वीं के छात्र–छात्राओं की मानसिक योग्यता एवं व्यावसायिक रूचि का अध्ययन किया। इस अध्ययन का यह निष्कर्ष था कि छात्र–छात्राओं की वाणिज्य संबंध व्यावसायिक रूचि में कोई अंतर नहीं है, दोनो संकाय के छात्र–छात्राओं की मानसिक योग्यता समान थी।

शर्मा (1999), ने नगरीय एवं उपनगरीय क्षेत्रों में अध्ययनरत् बालिकाओं की मानसिक योग्यता एवं व्यावसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन किया था। इस अध्ययन में नगरीय एवं उपनगरीय छात्राओं की मानसिक योग्यता में सार्थक अंतर पाया था, जबकि व्यावसायिक रूचि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया था।

सुदिष्ठ (1993), ने बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की भविष्य योजनाओं का अध्ययन किया। इस अध्ययन में विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि का भी अध्ययन किया गया था। इस अध्ययन मे शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की भविष्य योजना में अंतर पाया गया था।

नामदेव (1994), ने नवोदय विद्यालय में विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि का अध्ययन किया था। इस अध्ययन में निष्कर्ष पाया गया कि

नवोदय विद्यालय के अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं व्यावसायिक रूचि में सहसंबंध पाया गया था।

शर्मा (1994), ने आदिवासी एवं गैर आदिवासी क्षेत्र की छात्राओं की व्यावसायिक एवं शैक्षिक आकांक्षाओं का अध्ययन किया गया था। इस अध्ययन से निष्कर्ष निकला कि आदिवासी एवं गैर आदिवासी क्षेत्र की छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा में सार्थक अंतर नहीं है लेकिन आदिवासी एवं गैर आदिवासी क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है।